

Mami ki Tadapti Pyasi Chut

Added : 2015-11-23 15:49:30

दोस्तो.. मैं हूँ सैम.. मेरी पहली कहानी मामा की लड़की की चूत चुदाई आप लोग पढ़ चुके हैं.. जिसको बहुतों ने पसन्द किया.. कई पाठकों को मेरी कहानी झूठी लगी, अब मैं इसमें तो कुछ कर नहीं सकता.. जो है.. वो है अब मानना न मानना आपके ऊपर है।

अब आगे शायद हमारी (मन्जू और मेरी) चुदाई के बारे में वनिता ने मामी को बता दिया था.. जिसका पता मुझे दूसरे दिन शाम को चला.. और उसी दिन शाम को मुझे मामी ने अपने पास बुलाया।

मैं मामी के पास गया और वहाँ पहुँचने के बाद मामी बोलीं- सैम, तुमने ऐसा कैसे और क्यों किया.. ये सब करते वक़्त क्या तुमको ज़रा भी शर्म नहीं आई.. अरे कुछ तो सोचते.. वो तेरी होने वाली बीवी है.. कुछ भी कर देते हो.. आजकल के लड़के कुछ तो सोचते ही नहीं.. तुम्हें मालूम भी है कि तुम दोनों का रश्ता बचपन में ही तय हो गया है।

‘सारी मामी.. गलती हो गई.. मुझे नहीं पता था कि मन्जू से मेरी शादी होने वाली है.. अब से ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी।’

मेरी तो डर के मारे हालत ख़राब हो गई थी.. पर जब ये सुना कि मन्जू मेरी होने वाली बीवी है.. तो मेरी जान में जान आई।

फिर मामी बोलीं- अब और क्या होगा.. सब तो हो गया.. तुझे तो पता नहीं था.. पर मन्जू को तो सब पता था। चल छोड़.. वनिता बता रही थी तेरा ‘सामान’ बहुत तगड़ा है.. संभाल के रखना.. अभी उसको बहुत काम करना है..

ऐसा बोलते हुए मामी अश्लीलता से हँस दीं।

मुझे थोड़ा अजीब लगा.. मैं मामी को बोला- मैं जाऊँ मामी..?

‘हाँ सैम.. जा और सुन खाने के बाद छत पर आना.. तुझसे ज़रूरी बात करनी है।

मैं ‘ठीक है..’ बोल कर चला आया।

मैं उधर से नदी किनारे पहुँचा और उधर से दो पैग चढ़ा कर रात को वापस आया.. मेरी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि मामी को मुझसे क्या बात करनी है.. जो छत पर बुलाया है।

खाना खाने के घंटे भर बाद सब सोने की तैयारी करने लगे, मैं और मन्जू एक साथ बैठ कर बात कर रहे थे, मैंने उससे पूछा- हमारी शादी होने वाली है.. इसके बारे में तुमको पता था क्या?

वो बोली- हाँ.. पता है..

मैंने बोला- मुझे ये बात क्यों नहीं बताई?

वो शरमा कर चली गई, मैंने उसे बहुत बुलाया.. पर वो नहीं आई।

दूर से एक फ्लाइंग कसि देते हुए गुड नाईट बोली और मुस्कराते हुए चल दी।

मैंने सोचा- इतना सब कुछ हो गया और तब शायद इसलिए ये मुझसे इतना प्यार करती है।

फिर मैं छत पर गया.. वहाँ पर मामी कोने में चारपाई पर बैठी थीं, मैं उनके पास गया।

चांदनी रात थी मामी का बदन चमक रहा था, उनको देख कर मन में कामुक खयाल आ रहे थे।

मैं आप सब को मामी के बारे में बता दूँ। उनका नाम सरतिता है.. फगिर 38-34-40 उम्र 40 साल है, एकदम गदराया हुआ माल था।

मैं उनके पास गया.. वो मुझसे बैठने को बोलीं.. मैं उनके बगल में थोड़ा दूर होकर बैठ गया। वो मुझसे पास आने को बोलीं.. मैं पास को हो गया। मैंने पूछा- हाँ.. बताओ मामी.. क्या जरूरी बात करनी थी?

मामी मुझसे सटते हुए बोलीं- सैम वनी ने तेरे बारे में बताया.. तब से मेरा चैन उड़ गया है.. तेरे मामा का जब से एकसीडेंट हुआ है.. तब से हमारे बीच कोई मलिन नहीं हुआ है। डेढ़ साल हो गया है.. उनका 'सामान' ठीक तरह 'काम' के मतलब का ही नहीं रह गया है।

वे यह बोल कर मेरे कंधे पे सर रख के रोने लगीं। मैंने उनको सांत्वना देते हुए बोला- मामी सब ठीक हो जाएगा। मामी बोलीं- कुछ ठीक नहीं होगा.. डॉक्टर बता चुका है.. अब मुझे ऐसे ही तड़पते रहना होगा। मैं बोला- मामी भगवान पर भरोसा रखो.. 'वही तो रखा है.. नहीं तो कब से कुछ कर जाती मैं..'

'ओके मामी.. बताओ आपके लिए मैं क्या कर सकता हूँ?' मामी बोलीं- सैम.. पहले कसम खाओ जो बोलूँगी.. तुम वो करोगे.. ना नहीं कहोगे? मैंने सोचा फरि कहा- ओके.. मामी अगर मेरे बस की बात होगी.. तो मैं जरूर करूँगा.. 'नहीं सैम.. तुम करोगे कनिहीं.. यह बताओ..'
मैं बोला- ओके मामी.. मैं कसम खाता हूँ किकरूँगा.. चाहे कुछ भी हो।

फरि मामी थोड़ा खुश होकर बोलीं- सैम..!
'हाँ मामी.. बोलो..?'
'सैम.. मैं तेरे साथ सेक्स करना चाहती हूँ।'

मेरा दमिग खराब हो गया.. मेरे नशे के 2 पैग दारू भी बेअसर हो गईं। मैं मन में सोचने लगा कि हे ऊपर वाले.. तूने नारी को कसि मट्टी से बनाया है.. इसको समझना इतना मुश्किल क्यों है?
प्रत्यक्ष मैं मामी से बोला- मामी.. आप मेरी मामी हो.. और मेरी सास होने वाली हो.. क्या ये करना सही है?

मामी बोलीं- सैम.. जब तक तेरे बारे में पता नहीं था.. तब तक तो मैं सम्भली हुई थी.. पर अब मेरे मन में ये वचिर आ गया है.. अब शायद और नहीं हो पाएगा.. और तू 'नहीं' बोलेगा.. तो बाद में कसि दूसरे से होगा.. जसिसे यदबाहर कसि को पता चला तो घर की बदनामी हो सकती है.. तो अब बता क्या करना है.. तूने कसम भी खाई है और तू मेरे घर का भी है.. ये बात तेरे और मेरे बीच में ही रहेगी.. कसि को पता भी नहीं चलेगा।

मैं बोला- वो तो ठीक है मामी.. पर इतने सारे लोग यहाँ पर आए हे- और अगर कोई छत पर आ गया तो.. पता तो चल ही जाएगा ना.. मामी बोलीं- ठीक है.. अभी तो कोई भी आ सकता है.. पर रात 12 बजे तक सब सो जायेंगे। सब थके हैं तो कोई ऊपर भी नहीं आएगा.. तब करेंगे। मैं 'ओके..' बोला और उधर से जाने लगा..

तो मामी ने मुझे फरि से बुलाया- अपना सामान तो दिखाता जा.. सैम..

मैं बोला- लो खुद निकाल कर देख लो।
मामी बोली- सैम.. सरति बोल न.. मामी अब सबके सामने बोलना।
मैं 'ओके..' बोला।

उसने मेरा लन्ड निकाल कर देखा और बोली- सैम कहाँ छुपा रखा था इतना बड़ा 'सामान'?
मैं बोला- इसको नाम लेकर बोलो सरति रानी..
बोली- हाँ.. इतना बड़ा लण्ड कहाँ छुपा रखा था.. सैम मेरी जान..
मैं बोला- तेरे बेटे की चूत में कल रखा था सरति रानी।
वो बोली- मेरी बेटे के भाग्य खुल गए।
मैं बोला- साथ में तेरा भी भाग्य खुल गया सरति रानी।

वो लन्ड हाथ में लेकर सहनी लगी और फरि मुँह में लेकर चूसने लगी।
कुछ देर बाद मैं नीचे जाने को बोला.. तो पहले सरति नीचे गई.. उसके कुछ देर बाद मैं नीचे आया।

फरि मैं बस्ती के अन्दर सगिरेट पीने चला गया।
मैंने चार सगिरेट ले लिए.. फरि सगिरेट पीते हुए घर पहुँचा।

मैं पहले मंजू के कमरे में गया.. वहाँ पर दोनों बहनें थीं.. मेरे जाते ही वनी बाहर चली गई।
मैं और मंजू रह गए.. मैंने उसके पास जाकर उसकी तबयित के बारे में पूछा.. तो मंजू बोली- अब ठीक है।

मैं मंजू को चुम्बन करने लगा और उसके दूध दबाने लगा.. वो भी मेरा साथ दे रही थी।
दस मिनट बाद हम दोनों अलग हो गए, मैं मंजू को गुड नाईट बोल कर आ गया, आज मेरे दमिग सरति की चूत चुदाई घुसी थी।

रात को ठीक 12 बजे मैं छत पर गया वहाँ पर सरति मामी पहले से बैठी थी। मैं उसके पास जाकर चारपाई पर बैठ गया। सरति भी मुझसे सट कर बैठ गई और मेरी पैन्ट को खोलने लगी।

मैं भी उसका साथ दे रहा था। मैंने सरति को चुम्बन किया.. तो वो भी मेरा साथ देने लगी और जलदी-जलदी वो मेरा कपड़े खोलने लगी।
मैं भी सरति का कपड़े खोलने लगा। कुछ ही देर बाद हमारे जस्मों पर कोई कपड़ा नहीं बचा था। सरति का गोरा जस्म चांदनी रात में चाँद की रोशनी में जैसे नहा कर चमक रहा था.. एकदम गजब की माल लग रही थी।

मैंने सरति को होंठों पर चुम्बन किया.. वो भी मेरा साथ देने लगी।
हम दोनों 5 मिनट तक चूमाचाटी करते रहे। फरि सरति मेरा लण्ड लेकर चूसने लगी.. मैं भी सरति से बोला- मुझे भी तेरी चूत का स्वाद चखना है..।

यह सुनते ही उसने अपनी टांगें फैला दीं.. कुछ ही पलों बाद हम दोनों 69 की अवस्था में आ गए। मैं उसके भगनासे से खेलने लगा..सरति की चूत का स्वाद कुछ अजीब था। शायद चुदी हुई चूत थी.. इसलिए कुछ अलग स्वाद था।
कुछ देर बाद वो अपने दोनों पैर को अकड़ाने लगी.. मानो मेरे सर को अपनी चूत में घुसाना चाहती थी मुझे ऐसा लगा।
करीब 5 मिनट में ही उसका माल निकल गया, फरि वो थोड़ा रुक गई।

मैंने बोला- अभी मेरा नहीं हुआ है..

तो सरति बोली- सैम अपने लण्ड को मेरे छेद में डाल..

मैं बोला- साली कुतिया.. पहले चूस के माल नकिल.. फरि डालूंगा..

‘ओके..’ वो गपागप लॉलीपॉप की तरह लौड़ा चूसने लगी.. और साथ ही वो मेरे गोठों से खेल रही थी.. मुझे बड़ा मजा आ रहा था।

दस मिनट बाद मेरा नकिलने वाला था- ‘आह्ह.. सरति मेरी जान जल्दी..’

वो जल्दी-जल्दी चूसने लगी। फरि मेरा माल नकिल गया.. वो पूरा रस मुँह में ले कर पी गई और लौड़ा चाट कर साफ कर दिया।

कुछ देर तक हम दोनों चारपाई में लेटे रहे और एक-दूसरे के बदन से खेलने लगे। कुछ ही मिनट बाद मेरा फरि खड़ा हो गया और सरति भी चुदने को बेताब हो रही थी।

उसकी दोनों टाँगों को ऊपर करके मैं टाँगों के बीच में आ गया और चूत में लण्ड को लगा कर डालने लगा। चुदी हुई चूत थी.. इसलिए आसानी से अन्दर घुस गया.. पर बहुत दनिों से चुदाई नहीं हो रही थी.. इसलिए थोड़ा टाइट जा रहा था।

अभी 2 इंच लण्ड अन्दर गया था कि मैंने जोर से एक झटका लगा दिया.. जिसके कारण लण्ड 6 इंच अन्दर चला गया और सरति के मुँह से चीख नकिल गई- सैम मर गईईईईई.. आराम से.. कर..!

मैं बोला- साली हरामनि.. जब लण्ड लेने के लिए तेरा चैन उड़ गया है.. तो ले न मेरा मूसल..

ऐसा बोल कर मैंने एक और झटका लगा दिया। सरति को गाली देते हुए उसकी चूत की चुदाई करता रहा। लगभग 10 मिनट बाद वो झड़ गई।

मैं बोला- कुतिया.. साली भैन की लौड़ी.. ले मेरा लण्ड ले.. तेरे होने वाले दामाद का लण्ड ले.. कुतिया मेरी सासू जान.. मन्जू का लण्ड ले.. भोसड़ी वाली.. तेरे को चैन नहीं आ रहा था न.. बगैर लण्ड के.. तो ले रंडी.. ले..

सरति भी जोश में आ गई- चोद माँ के लौड़े.. अपनी होने वाली सास को चोद.. फाड़ दे.. इस चूत को.. बहुत तड़पाती है.. जोर से चोद.. फाड़ दे मेरे बड़े लण्ड वाले दामाद.. तेरे लण्ड से मेरी चूत को दण्ड दे.. सैम.. डेढ़ साल से प्यासी है मेरी चूत.. चोद इसे.. आह्ह.. मजा आ गया..

कुछ देर के बाद मैं सरति को डॉगी स्टाइल में आने को बोला और पीछे से उसकी चूत मारने लगा।

‘सरति.. तेरी बेटी चोदूँ हरामनि.. तू तो बड़ी सेक्सी है रे.. मैं तो धन्य हो गया.. तेरी जैसी सास को पाकर.. ले मेरी जान..आह्ह..’

‘हाँ.. मैंने भी कोई पुण्य कया था.. जो तेरे जैसा लण्डधारी दामाद मला मुझे.. सैम.. चोद सैम.. फाड़ दे इस चूत को!’

‘हाँ.. मेरी सरति रण्डी.. साली कुतिया.. ये ले.. ले..’

‘सैम.. जोर से कर.. आह्ह.. मैं बस आ रही हूँ.. आह्ह.. मैं.. और जोर से जान..’

‘मेरा भी होने वाला है सरति.. कधिर चोद दूँ मलाई?’

‘चूत में डाल दे.. बहुत दनिों से सूखी है.. भर दे तेरे माल से..’

मैंने चुदाई की स्पीड बढ़ा दी और मैं सरति की चूत में ही झड़ गया.. पूरा माल सरति के चुदे छेद में डाल दिया।

इस एक घंटे की धकापेल चुदाई में सरति 5 बार झड़ी थी और मैं 2 बार झड़ा था।

उसके बाद मैंने कुछ देर आराम कया फरि उसके चूतड़ों में दो चपत लगाई.. सरति को चुम्बन कया और नीचे आया।

सरति मुझे 'थैंक यू..' बोली और मुझसे गले लग कर रोई.. मैं उसे समझा बुझा कर नीचे लाया। सब सोये हुए थे.. हम लोग भी सोने के लिए लेट गए।

आप लोगों को कैसी लगी मेरी यह सच्ची कहानी.. प्लीज़ दोस्तों मुझे ईमेल कीजिएगा और जरूर बताईएगा।

शायद पहले की कहानी कुछ दोस्तों को फेक लगी थी.. पर अब शायद कुछ भ्रम दूर हो गया होगा।
sk885899@gmail.com

« [Back To Home](#)

For more sex stories Visit: [AntarVasna.Us](#)